पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 16.07.2023 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9958889970 पर Paytm कर दें। – अनिल आर्य

वर्ष-40 अंक-04 श्रावण-2080 दयानन्दाब्द 200 16 जुलाई से 31 जुलाई 2023 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2023, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य नेता अनिल आर्य की समस्त आर्य जगत से अपीलः–

श्रावणी पर्व पर युवा संस्कार अभियान चलायें और मिशन-25

यानि 12 से 25 वर्ष तक के युवाओं को जोड़ने के लिये यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ साथ यज्ञोपवीत संस्कार करवायें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के कार्यक्रम अपने निकट वाले में सम्मिलित हो

1. शनिवार, 12 अगस्त 2023, प्रातः 8.30 बजे, आर्य समाज, गुड़मण्डी, उत्तरी दिल्ली
2. शनिवार, 12 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे, टी पी डी डी एल सेन्टर, पी 4, जगदम्बा मार्केट, सुलतानपुरी, उत्तर पश्चिमी दिल्ली
3. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे, आर्य समाज, हापुड़,उ.प्र.
4. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, आर्य समाज, महावीर नगर, पश्चिमी दिल्ली
5. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, समर्पण शोघ संस्थान, सेक्टर–5, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद
6. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, आर्य समाज, वजीरपुर, जे.जे कालोनी, उत्तरी दिल्ली
7. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 8.15 बजे, आर्य समाज,नगर शाहदरा,पूर्वी दिल्ली
8. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे, आर्य समाज, सन्देश विहार, उत्तर पश्चिमी दिल्ली
9. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, मानव निर्माण केन्द्र, नांगलोई विस्तार, पश्चिमी दिल्ली
10. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे, आर्य समाज, नरेला, दिल्ली देहात
11. रविवार, 13 अगस्त 2023, सायं 3 बजे, डी–1/330, गली–3, एम.आई.जी.,अशोक नगर,पूर्वी दिल्ली
12. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, ग्राम वहरावद, अलीगढ़,उ.प्र
13. रविवार, 13 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे, आर्य समाज, राम विहार, लोनी, उ.प्र.
14. मंगलवार, 15 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, आर्य समाज, कबीर बस्ती, उत्तरी दिल्ली
15. मंगलवार, 15 अगस्त 2023, सायं 3 बजे, आर्य समाज, सूर्य निकेतन, पूर्वी दिल्ली
16. बुधवार 16 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, श्रद्धा मन्दिर स्कूल, सेक्टर 87, ग्रेटर फरीदाबाद
17. वीरवार, 17 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे, विजय हाई स्कुल, सिक्का कालोनी, सोनीपत, हरियाणा
18. शुक्रवार, 18 अगस्त 2023, प्रातः 11 बजे, आर्य समाज, उत्तम नगर,पश्चिमी दिल्ली
19. शनिवार 19 अगस्त 2023,शाम 5 बजे, आर्यन क्लासेस,गली न. 5, विश्वास नगर, पूर्वी दिल्ली
20. शनिवार 19 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, निधि पब्लिक स्कूल भारत नगर, फरीदाबाद
21. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे, संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद
22. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 10 बजे, टीनु पब्लिक स्कुल, संगम विहार, दक्षिण दिल्ली
23. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 9 बजे, ग्राम नादौन, हाथरस, उ.प्र.
24. रविवार, 20 अगस्त 2023, प्रातः 8 बजे, आर्य समाज, देव नगर, मध्य दिल्ली
25. रविवार, 20 अगस्त 2023, सायं 3 बजे, आस्था लेन न.2, ज्ञान खण्ड, इन्दिरा पुरम, उ.प्र.

देहरादून में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड का आर्य सम्मेलन सम्पन्न

जब तक हम अपने जीवन में श्रेष्ठ बातें धारण नहीं करेंगे तब तक न युवा जगेगा न देश बचेगा –आचार्य आर्यनरेश

देहरादून नगरनिगम के सभागार में दिनांक 25–6–2023 रविवार को अपरान्ह 3.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक आयोजित 'वैदिक संस्कृति संगोष्ठि' सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। गोष्ठि का विषय था 'भारतीय संस्कृति – कल, आज और कल'। गोष्ठि का उद्देश्य गोष्ठि के विषय के अन्तर्गत भारत वर्ष के युवाओं के सम्मुख उपस्थित वर्तमान परिस्थितियों, प्रमुख चुनौतियों तथा उनके वैदिक समाधान प्रस्तुत करना था। इस गोष्ठी में उत्तराखण्ड राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल श्री भगतसिंह कोश्यारी जी, आर्यविद्वान एवं नेता स्वामी आर्यवेश, आचार्य आर्यनरेश, आचार्या कल्पना आर्या, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य डा. धनंजय आर्य जी, महन्त कृष्णागिरी जी, श्री विट्ठलराव आर्य जी, महन्त वीरेन्द्रानन्द गिरी जी, श्री विश्वमित्र आचार्य, डा. बी.के.एस. संजय जी, गोविन्दसिंह भण्डारी जी, श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्य आदि ने अपने विचार प्रस्तुत कर श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन आर्यसमाज के युवाविद्वान आचार्य डा. धनंजय जी ने कुशलतापूर्वक किया। कार्यक्रम के आरम्भ में द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल, देहरादून की पांच कन्याओं ने समवेत स्वरों से एक गीत प्रस्तुत किया। गीत के शब्द थे 'होते हैं दीदार दाता, होते हैं दीदीर, दे दे अब दीदार, ओ मेरे सरताज, ज्योति जले तब मन की।' इस गीत के बाद दीप प्रज्जवलन किया गया। मंचस्थ सभी विद्वानों ने कन्या गुरुकुल की कन्याओं द्वारा मन्त्रोच्चार के मध्य दीपों को प्रज्जवलित किया। दीप प्रज्जवलन के बाद कार्यक्रम का संचालन कर रहे वैदिक विद्वान आचार्य डा. धनंजय आर्य जी ने आज के कार्यक्रम की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस गोष्ठि में वैदिक संस्कृति के मूल ध्येय, इसकी वर्तमान स्थिति तथा इसके भविष्य पर विचार करेंगे। इस कार्यक्रम के सूत्रधार प्रसिद्ध आर्य विद्वान एवं नेता श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने कार्यक्रम की प्रस्ताविकी को पढ़कर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संस्कृति का तात्पर्य किसी वस्तु व कार्यप्रणाली आदि को परिष्कृत करना होता है। शर्मा जी ने महर्षि दयानन्द के टंकारा में जन्म का उल्लेख किया और तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों पर भी प्रकाश डाला। इस प्रस्ताविकी में सरकार से कुछ मांगे भी की गईं हैं जिन्हें पढ़कर श्रोताओं को बताया गया। इस प्रस्ताविकी को हम पृथक से एक लेख आदि के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे।

कार्यक्रम में पधारे उत्तराखण्ड राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल श्री भगतसिंह कोश्यारी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ऐसे पहले सन्त हुए हैं जिन्होंने अपने समय व उससे पूर्व की देश की परिस्थितियों वा समाज के सभी पक्षों व पहलुओं का सूक्ष्मता से अध्ययन किया था। ऐसा उन्होंने इसलिए किया कि जिससे भारत पुनः विश्वगुरु का स्थान प्राप्त कर सके। विद्वान वक्ता ने अन्य महापुरुषों की भी चर्चा की और उनके देश व समाज को योगदान को रेखांकित किया। श्री कोश्यारी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द पहले महापुरुष थे जिन्होंने जागरण वा समाज सुधार कार्यों को आरम्भ किया। उन्होंने आगे कहा कि सत्य एक होता है जिसे विद्वान अनेक प्रकार से प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कहा कि यदि स्वामी दयानन्द जी न हुए होते तो न जाने देश में कितने लोगों का धर्मान्तरण हो जाता। श्री कोश्यारी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने यह बात सबसे अच्छी की कि उन्होंने देश में बालक व कन्याओं की शिक्षा का प्रचार व प्रसार किया जिसका बड़े व्यापक स्तर पर विस्तार उनके अनुयायियों द्वारा किया गया। पूर्वराज्यपाल महोदय ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने देश से अस्पश□□यता को दूर करने का सबसे पहले प्रयास किया था। श्री कोश्यारी जी ने आगे कहा कि आर्यसमाज अत्यन्त श्रेष्ठ कार्य कर रहा है। उन्होंने इस क्रम में आर्यसमाज द्वारा स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में किए गए महान कार्यों की चर्चा भी की। श्री भगतसिंह कोश्यारी जी ने कहा कि हमारा मूल संस्कृत में है। संस्कृत हम सबको परस्पर जोड़ती है। उन्होंने इस बात के समर्थन में अपने जीवन के व्यक्तिगत उदाहरण भी प्रस्तुत किए। श्री कोश्यारी जी ने यूपीएससी एवं आईएएस/आईसीएस परीक्षाओं के परिणामों का उल्लेख कर बताया कि इन परिक्षाओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थानों पर कन्याओं ने स्थान प्राप्त किया है। विद्वान वक्ता ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने स्त्री शिक्षा का आरम्भ करते हुए उसके इस परिणाम का शायद अनुमान भी नहीं किया होगा। उन्होंने कहा कि स्कूली शिक्षा में स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन चरितों को पढ़ाया जाना चाहिये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए श्री भगतसिंह कोश्यारी जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी का महापुरुषों में प्रथम स्थान है।

आर्यसमाज के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद हमारी संस्कृति का पतन हुआ। महाभारत युद्ध से पूर्व समूचे विश्व में वैदिक धर्म एवं संस्कृति का ही प्रचलन था। स्वामी जी ने कहा कि जिस देश में तप व दीक्षा का प्रचार होता है व लोग इसे जीवन में धारण करते हैं वह देश उन्नति करता है। स्वामी जी ने वेदों से आरम्भ गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था पर प्रकाश डाला और बताया कि महाभारत से पूर्व समूचे देश में वर्णव्यवस्था प्रचलित थी। जन्मना जातिवाद का कहीं कोई नाम भी नहीं था। स्वामी जी ने श्रोताओं को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों के गुण, कर्म व स्वभाव तथा लक्षण बताये। उन्होंने कहा कि हमारे शरीर में जो स्थान वा महत्व पैरों का है वही स्थान राष्ट्र में शूद्रों का होता है। पैर शरीर को धारण करते हैं इसी प्रकार से शूद्र भी राष्ट्र को धारण करते हैं। वैदिक संस्कृति बहुत ऊंची संस्कृति रही है। उन्होंने कहा प्राचीन काल में वैदिक संस्कृति ही समूचे विश्व के देशों की संस्कृति भी थी। उन्होंने वैदिक संस्कृति को यूनिवर्सल संस्कृति की संज्ञा दी। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज देश व समाज में व्यवस्था–परिवर्तन की आवश्यकता है जिससे आज की प्रमुख समस्याओं का निवारण सम्भव हो सके। स्वामी जी ने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द जी की बात मान ली गई होती तो आज देश व समाज में जो समस्यायें हैं वह न होती। स्वामी जी ने लिव–इन–रिलेशन एवं समलैंगिकता की चर्चा भी की और इन्हें अनुचित व अनावश्यक सहित धर्म व संस्कृति के विरुद्ध बताया। स्वामी जी ने आगे कहा कि हमारे देश की माताओं को अपने बच्चों को वैदिक संस्कार देने चाहियें। उन्होंने देश में यम, नियम और धर्म के राजर्षि मनु के दस लक्षणों का प्रचार किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि इन्हें पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित किया जाना चाहिये।

आर्यसमाज के ओजस्वी विद्वान एवं वयोवृद्ध वक्ता आचार्य नरेश जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस वैदिक संस्कृति संगोष्ठि का उद्देश्य युवा पीढ़ी को जगाना व देश को बचाना है। उन्होंने कहा कि धर्म एवं संस्कृति के प्रेमी सद्–गृहस्थियों से ही निकलेंगे। आचार्य जी ने आगे कहा कि जब तक हम श्रेष्ठ बातें अपने जीवन में धारण नहीं करेंगे तब तक न युवा जगेगा न देश बचेगा। वैदिक संस्कृति की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य एवं धर्म है। धर्म एवं संस्कृति की रक्षा और उस पर चले बिना हम बच नहीं सकते। आचार्य आर्यनरेश जी ने कहा कि भारतवर्ष आर्यधर्मी देश है। भारत का धर्म सत्य सनातन वैदिक धर्म है। आचार्य जी ने कहा कि हम महान् थे जब हम वेदों के अनुसार बुद्धिपूर्वक चलते थे। आचार्य जी ने लोगों को प्रेरणा देते हुए कहा कि सभी माता पिताओं को अपनी सन्तानों को वैदिक धर्म की पुस्तकें पढ़ानी चाहिये। माता–पिता बच्चों को चाहिए कि वह धर्म पुस्तक सत्यार्थप्रकाश आदि का पाठ बच्चों से करायें और माता–पिता तथा घर के बड़े सज्जन उन पुस्तकों के बच्चों द्वारा किये जाने वाले पाठ को ध्यानपूर्वक सुनें। आचार्य नरेश जी ने कहा कि सन्तानें ऐसी होनी चाहियें जो राष्ट्रहित में बलिदान देने के लिए तत्पर हों। आचार्य जी ने आह्वान किया कि अपने महापुरुषों राम, कृष्ण, दयानन्द जी आदि का अपमान मत करो। उन्होंने कहा कि जो यह कहता है कि कृष्ण जी माखन चोर थे, वह कृष्ण जी का अपमान करता है। उन्होंने कहा कि कृष्ण जी के यहां ग्यारह हजार गौंवे थी। क्या ऐसा व्यक्ति किसी दूसरे के घर से मक्खन की चोरी करेगा? उन्होंने कहा कि कृष्णजी पर यह आरोप निराधार और असत्य है। आचार्य जी ने बताया कि वह वडोदरा के निकट मोदी जी द्वारा बनवाई गई संसार की सबसे ऊंची मूर्ति 'स्टैचू–आफ–यूनिटी' देखने गये थे। इस स्थान पर मूर्ति के नीचे बनी गैलरी में उन्होंने लिखा पाया कि सभी क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्रोत ऋषि दयानन्द थे। इसी के साथ आचार्य नरेश जी ने अपनी वाणी को विराम दिया।

आयोजन में वैदिक जगत् की प्रसिद्ध विदुषी आचार्या डा. कल्पना आर्या जी भी पधारी थी। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि स्त्री को नाभि वा केन्द्र से हटाने के लिए सारा विश्व खड़ा है। आचार्या जी ने लिविंग–इन–रिलेशन की चर्चा की और कहा कि उन बहिनों को, जो आजादी की बातें करती हैं, सम्भालना बहुत आवश्यक है। आचार्या जी ने वर्तमान समय में हमारी लड़कियों को विधर्मियों द्वारा बुरे इरादों से प्रभावित कर उन्हें विधर्मी बनाने व मारने आदि की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। आचार्या जी ने कहा कि हमें अपने बच्चों को समझाने के लिए अपने गृहस्थ को सुधारना होगा जिससे हमारी भोली व नासमझ बेटियों को कोई विधर्मी फंसा न सके। बहिन कल्पना आर्या जी ने कहा कि नारी राष्ट्र की ध्वजा है। ध्वज सम्मान का प्रतीक होता है। उसका कोई अपमान करे तो हम उसे सहन नहीं कर सकते। इसी प्रकार यदि कोई हमारी बेटियों का अपमान करता है तो उसे सहन नहीं किया जा सकता। आचार्या जी ने आगे कहा कि नारी भोग की वस्तु नहीं है। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय में नारियों के सम्मान की रक्षा के लिए ही बड़े–बड़े युद्ध यथा राम–रावण व महाभारत आदि युद्ध लड़े गये हैं। युवा कन्याओं की वर्तमान मानसिक स्थिति व मनोदशा का आचार्या जी ने सजीव चित्रण किया। उन्होंने कहा कि आज नारी को भोग की वस्तु बना दिया गया है। यदि आज हमारा पौरुष नहीं जागा तो हमारे समस्त महापुरुष और पूर्वज हमें धिक्कारेंगे।

स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती भी आयोजन में आये थे और उन्होंने भी ओजस्वी विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि हमारा भारत विश्वगुरु था। समय बीतने के साथ हमारी आपस की फूट के कारण वृहत्तर वा अखण्ड भारत खण्डित हुआ। वेदों के ज्ञान के दूर जाने के कारण आर्य हिन्दू जाति कमजोर हो रही है। स्वामी जी ने कहा कि टीवी के अधिकांश कार्यक्रम हमारी संस्कृति अनुरूप नहीं है। इन कार्यक्रमों से हम कुसंस्कारों का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मोबाइल का अधिक प्रयोग करने के कारण हमारी युवा पीढ़ी बर्बाद हो रही है। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य को विराम देते हुए कहा कि संस्कार केवल वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में ही मिलते हैं।

आयोजन में सनातनी विद्वान महन्त कृष्णागिरी जी को भी आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि उनका निर्माणी अखाड़ा देश में गुरुकुलों सहित इंजीनियरिंग एवं अन्य विषयों के कालेज चला रहा है। उन्होंने कहा कि जब तक गाय, गंगा तथा हमारी संस्कृति नहीं बचेगी हम सुरक्षित नहीं रह सकते। महन्त जी ने कहा कि हम अपने बच्चों को अपने धर्म एवं संस्कृति की सभी महत्वपूर्ण व उपयोगी बातों को नहीं सीखा पाते। महन्त जी ने परिवारों में माता–पिता की स्थिति की चर्चा की। उन्होंने कहा कि सन्तानों को अपने–अपने माता–पिताओं का सम्मान करना चाहिये। उन्होंने सभागार में उपस्थित बड़ी संख्या में श्रोताओं को प्रेरणा देते हुए कहा कि अपने बच्चों को धर्म व संस्कृति में निहित संस्कार दें और उन्हें अपनी सभी परम्पराओं का परिचय दें। महन्त जी ने स्वामी दयानन्द जी का सम्मान से युक्त शब्दों में उल्लेख किया और उनके कार्यों की सराहना की। महन्त कृष्णागिरी जी ने कहा कि जब तक हम जगेंगे नही हमारी मातायें और बच्चे सुरक्षित नहीं रहेंगे। महन्त जी ने माताओं को कहा कि वह अपनी पुत्रियों को भारतीय संस्कृति के अनुरूप मर्यादित वस्त्र पहनने की प्रेरणा करें। आर्यनेता श्री विट्ठलराव आर्य जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि तप व दीक्षा का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है। उन्होंने बताया कि हमारी धर्म व संस्कृति पर वर्तमान समय में जो संकट है वह वाममार्गी विचारधारा वाले समूहों द्वारा हो रहा है। विद्वान वक्ता श्री विट्ठल राव आर्य जी ने कहा कि विकासवादी नीति युवा पीढ़ी के भोगवादी भी बनाती है। श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्य जी ने सभा को बताया कि

(शेष पृष्ठ 4 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 556वां वेबिनार सम्पन्न

'जन्म और मृत्यु अभिन्न मित्र' पर गोष्ठी सम्पन्न

मनुष्य निष्काम कर्म करता चल–आचार्य हरिओम शास्त्री

शुक्रवार, 30 जून 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'जन्म और मृत्यु अभिन्न मित्र' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 553 वा वेबिनार था। वैदिक विद्वान् आचार्य हरिओम शास्त्री ने कहा कि जन्म और मृत्यु के दोनों पंखों के सहारे जीवात्मा रूपी पक्षी संसार की यात्रा करती है। मुक्ति होने तक जीव के ये दोनों मित्र कभी भी इसका साथ नहीं छोड़ते हैं। 'आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।सामान सौ बरस का पल की ख़बर नहीं।।' वेद ने कहा है कि– द्वा सुपर्णा सयुजा सखायरू,समानं वृक्षं परिषष्व जाते तयोरन्यरूपिप्पलं स्वादयत्यश्नन्योऽभिचाकशीति।। अर्थात् –एक ही वृक्ष पर समान रंग रूप के दो पक्षी बैठे हैं।उनमें से एक उस वृक्ष के फलों का स्वाद ले लेकर खाता है और दूसरा उन्हें न खाकर केवल अपने साथी को फलों को खाते हुए देखता है। इसमें परमात्मा और जीवात्मा रूपी दो अभिन्न मित्र प्रकृति रूप वृक्ष पर बैठे बताए गए हैं।उनमें से एक जीवात्मा रूपी पक्षी उस प्रकृति रूप वृक्ष का फल खाता है और दूसरा परमात्मा रूपी पक्षी उसे खाते हुए देखता है परन्तु उन फलों को खाता नहीं है।। इसी भोग का परिणाम जन्म और मृत्यु तथा तरह तरह के रोग हैं। सारे जीवन में एक ही चीज जीव को घुमाती रहती है। 'हासिल ऐ जिन्दगी हसरतों के सिवा कुछ भी नहीं।यह किया नहीं वह हुआ नहीं यह मिला नहीं वह रहा नहीं।।' कर्म करने का अधिकार जीवात्मा के जिम्मे होता है परन्तु उनका फल प्राप्त करना उसके अधीन नहीं है।कर्म किया गया है तो उसका फल भी उसी समय तय हो गया है।अतः केवल कर्म करने पर ही ध्यान रखें फल तो उनका मिलेगा ही।क्योंकि –'उठाना सबको पड़ता है थका हुआ बदन अपना।कि जबतक सांस चलती है कोई कंधा नहीं देता।।' इसलिए इनकी परवाह न करके केवल मुक्ति की प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए। मुख्य अतिथि आर्य नेता आनन्द सिंह आर्य व अध्यक्ष रजनी चुघ ने कहा कि जन्म मृत्यु एक सिक्के के दो पहलू हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि ष्न जन्म कुछ,न मृत्यु कुछ। बस इतनी सी बात है किसी की आंख खुल गई किसी को नींद आ गई। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'सद्गुण अपनाएं–दुर्गुण भगाएं' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सद्गुणों से युक्त नागरिक होंगे तो देश सुखों से पूरित होगा–आचार्या श्रुति सेतिया

सोमवार, 3 जुलाई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'सद्गुण अपनाएं–दुर्गुण भगाएं' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 554 वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता वैदिक विदुषी आचार्या श्रुति सेतिया ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि मनुष्य का कर्तव्य सद्गुणों से युक्त होना तथा दुर्गुणों को हटाना है।मनुष्य जीवन में दुर्गुण व दुर्व्यसन व्याधियों व रोगों के समान होते हैं।दुर्गुण व दुर्व्यसनों से मनुष्य का पतन होता है।इनके होते हुए मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति नहीं हो सकती।इनको दूर करने तथा इनके स्थान पर श्रेष्ठ गुण,कर्म व स्वभाव को धारण करने पर ही मनुष्य की आत्मा व शरीर उज्वल जीवन को प्राप्त होते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने संस्कार विधि में प्रार्थना व उपासना के पहले मंत्र का हिंदी में अनुवाद किया तथा अर्थ देते हुए कहते हैं की 'हे सकल जगत के उत्पत्ति कर्ता,समग्र, ऐश्वर्य युक्त, शुद्ध स्वरूप,सब सुखों के दाता परमेश्वर,आप कृपा करके हमारे समस्त दुर्गुण,दुर्व्यसन और दुखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याण कारक गुण, कर्म व स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कीजिए' स्वामी जी के इस प्रिय मंत्र पर विचार करने पर इसका महत्व ज्ञात होता है।इस मंत्र के अर्थ को आत्मसात् कर सदैव इसके अनुसार अपने जीवन को बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।इसका लाभ हमें तो होगा ही इसके साथ साथ अन्य मनुष्य जो हमारी संगति को प्राप्त होंगे उनको भी लाभ होगा।हमें महापुरुषों के जीवन का अध्ययन करना चाहिए,क्योंकि उनके जीवन में दुर्गुण व दुर्व्यसन न्यूनतम तथा सद्गुण अधिकतम होते हैं।ऋषि मुनि तथा सभी महापुरुष सब मनुष्यों को बुराइयों को छोड़ने तथा श्रेष्ठ गुणों को धारण करने का संदेश देते हैं।जो मनुष्य इस नियम व वैदिक शिक्षाओं का पालन करते हैं वह निश्चय ही प्रशंसनीय एवम् अपने जीवन को श्रेष्ठ गुणों से युक्त करने वाले बनते हैं और ऐसे मनुष्यों का जीवन सुखी व सफलता को प्राप्त होता है।मनुष्य को स्वाध्याय व वैदिक सत्संग और पंच महायज्ञ विधि सहित ईश्वर उपासना आदि कार्य करते हुए निरंतर अपने दुर्गुणों को दूर करते रहना चाहिए और वेद विहित जो सद्कर्म आदि कार्य हैं उनका आचरण व पालन करना चाहिए।जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य को सत्य मार्ग पर चलते हुए सद्गुणों से युक्त रहने व दुर्गुणों से रहित होने की प्रेरणा दी जाती है।देश की सरकार का भी कर्तव्य है कि वह अपनी योजनाओं को बनाते समय यह ध्यान रखे कि उसके सभी नागरिक सत्य गुणों से युक्त तथा असत्य दुर्गुणों से पृथक रहें।ऐसा देश व समाज ही उत्तम,कल्याण कारी एवम् आदर्श होता है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री सुनीता रसोत्रा व अध्यक्ष श्रीमती शशि कांता ने सद्गुण अपनाने और दुर्गुण छोड़ने पर बल दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए महापुरुषों के जीवन से गुण धारण करने का आह्वान किया एवं राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

556 वां आर्य वेबिनार सम्पन्न

सुदृढ़ राजनीति राष्ट्र का आधार है – आर्य रविदेव गुप्त

सोमवार 10 जुलाई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'हमें राष्ट्र को बचाना है' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 556 वा वेबिनार था। वैदिक विद्वान् आर्य रविदेव गुप्त ने कहा कि सुदृद्र राजनीति राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक है, वर्तमान सरकार मजबूत होने के निर्णय लेने में सक्षम है तभी राष्ट्र विकास कर सकता है। उन्होने कहा कि भारत देश हमारी जन्म, कर्म व धर्म भूमि है इसीलिए इसका हम मातृभूमि के रूप में आदर करते हैं। इसे सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से बचाना हमारा पहला कर्तव्य है। आज हमारा देश राजनीतिक रूप से स्थिर, आर्थिक रूप से उन्नत व सांस्कृतिक रूप से जागृत हो रहा है। आओ हम सब मिलकर फिर से अपने देश को बचाएं। मुख्य अतिथि आर्य नेता सोहन लाल आर्य व अध्यक्ष आनंद प्रकाश आर्य ने भी वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए एक सजक नागरिक बनने का आह्वान किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि राष्ट्र सर्वप्रथम है राष्ट्र सुरक्षित है तो हम सब सुरक्षित है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

122 वें जन्मोत्सव पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को किया नमन

वीरवार 6 जुलाई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 122वें जन्मोत्सव पर ऑनलाइन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि देश में समान आचार संहिता लागू करना ही डॉ . मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।उन्होने कहा कि आर्य समाज समान आचार संहिता का पुरजोर समर्थन करता है।एक देश में एक समान कानून लागू होने ही चाहिए।उन्होने कहा कि डॉ. मुखर्जी अखण्ड भारत के स्वप्न द्रष्टा थे उन्होंने उस समय जम्मू कश्मीर की परमिट परिपाटी के विरुद्ध संघर्ष का सिंहनाद किया था।उन्होंने राष्ट्र को सन्देश दिया कि एक देश में दो प्रधान,दो विधान,दो निशान नहीं चलेंगे।वे जम्मू कश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग बनाने के लिए बलिदान हो गए।उनके बलिदान को सच्ची श्रद्धांजलि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा धारा 370 व 35। समाप्त करके दी गयी है। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे कम आयु के उपकुलपति बने,उन्होंने पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं की रक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। उल्लेखनीय है कि डॉ. मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था।उनके पिता भी सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे।अपने पिता का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी अल्पायु में ही विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित कर लीं व 33 वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि डॉ.मुखर्जी ने राष्ट्र की एकता अखंडता के लिए अपना बलिदान दिया,उनके कार्य सदियों तक आने वाली पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। आर्य नेता यशोवीर आर्य ने डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन से युवाओं को प्रेरणा लेने का आह्वान किया।देवेन्द्र भगत ने आभार व्यक्त करते हुए डॉ.मुखर्जी को राष्ट्रवाद का प्रतीक बताया। धर्मपाल आर्य ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों पर चलने की आवश्यकता है तभी हम राष्ट्रीय एकता अखंडता को मजबूत रख सकते हैं।

'समान आचार संहिता की महत्ता' पर गोष्ठी सम्पन्न

शुक्रवार 7 जुलाई 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 'समान आचार संहिता की महत्ता' पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 555 वां वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने समान अचार संहिता की विवेचना प्रस्तुत की और यह बताया कि सृष्टि के अदिकाल में सर्वज्ञ ईश्वर ने अल्पज्ञ मनुष्यों के लिए वेद प्रकाशित किये और तत्पश्चात भगवान मनु ने वेदों में निहित धर्म के आधार पर दिव्य ग्रन्थ मनुस्मृति प्रदान की।जब मनुष्यों ने सभ्य जीवन और संस्थागत जीवन में प्रवेश किया तो उन्हें मनुस्मृति की आवश्यकता पड़ी।यही मनुस्मृति सब मनुष्यों को एक समान मानती है और इसी अवधारणा के आधार पर उनके लिए एक अचार संहिता और विधान देती है।इसी मूल अवधारणा के आधार पर समान नागरिक संहिता की आवश्यकता पड़ती है।वक्ता ने फिर विश्व के कुछ उन देशों के नाम प्रस्तुत किये जहां समान नागरिक संहिता लागू है और यह कहा कि यह दुर्भाग्यवश भारत में लागू नहीं है।उन्होंने इस विषय के कुछ ऐतिहासिक और राजनीतिक पहलुओं को छुआ।इस बात को श्रोताओं के समक्ष रखा कि समान नागरिक संहिता पूर्णतः युक्ति संगत और न्यायोचित है।यह शुद्ध लोकतान्त्रिक विचारधारा के अनुरूप है।इस विचारधारा के मुख्य बिंदु हैं——समानता,न्याय और बंधुत्व।भारतीय संविधान के अनेक सम्बद्ध अनुच्छेदों की चर्चा की और इस बात पर संकेत दिया कि किस प्रकार इनमें से कुछ अनुच्छेद दूसरे अनुच्छेदों से विरोधाभास पर हैं।इन संवैधानिक त्रुटियों को सही करने की आवश्यकता है।वर्तमान सरकार की मंशा इस विषय पर ठीक है और यह समान नागरिक संहिता लाने का प्रयास कर रही है।हम सब राष्ट्रभक्त नागरिकों को सरकार की इस प्रस्तावना का पुरज़ोर समर्थन करना चाहिए। ऐसी संहिता देश की अखंडता और समाज के संगठन को दृढ़ करेगी।पंथ और धर्म में मौलिक अन्तर है और हमें इस अन्तर को पहचान के सरकार के सामने लाना चाहिए।इसके अनुसार संविधान में संशोधन करने की आवश्यकता पर बल दिया। संविधान समान विधान का नाम है। ऐसा विधान जो पक्षपाती हो,संविधान ही नहीं कहलाया जा सकता। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि केन्द्र सरकार को समान आचार संहिता कानून शीघ्र लागू करना चाहिए यह देश हित में है, आर्य समाज इसका समर्थन करता है। मुख्य अतिथि डॉ. गजराज सिंह आर्य व अध्यक्ष डॉ. कर्नल विपिन खेड़ा ने भी कानून को राष्ट्र हित में आवश्यक बताया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य स्वयं युनिफोर्म सिविल कोड के पक्षधर हैं,उन्होंने ने वक्ताओं का एवं श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

(पृष्ठ 2 का शेष)

उनकी टीम के प्रयत्नों से उत्तराखण्ड सरकार द्वारा देहरादून के रिस्पना पुल का नाम ''महर्षि दयानन्द सेतु" कर दिया गया है। देहरादून के इसी स्थान पर ऋषि दयानन्द सन् 1879 में हरिद्वार से सड़क मार्ग से पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि सरकार ने इसी स्थान पर ऋषि दयानन्द की एक आदमकद मूर्ति स्थापित करने का प्रस्ताव भी स्वीकार कर लिया है। इस प्रस्ताव को शीघ्र ही क्रियान्वित किया जायेगा। आयोजन के एक प्रमुख वक्ता महन्त श्री वीरेन्द्रानन्द गिरी जी ने ऋषि दयानन्द को अपनी व सब सिद्ध पुरुषों की ओर से कोटि–कोटि नमन एवं प्रणाम निवेदन किया। उन्होंने बताया कि सबसे अधिक शक्ति ओ३म् परमात्मा में है। स्वामी जी ने कहा कि माता में भी शक्ति है। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ा मन्दिर माता वा भारत माता का मन्दिर है। स्वामी जी ने कहा कि यदि आप विश्व वा देश को जानना चाहते हैं तो इसके लिये ऋषि दयानन्द को जानों, ऐसा करके आप विश्व व देश को जान सकेंगे। उन्होंने कहा कि भारत विश्व गुरु था, है और आगे भी रहेगा। स्वामी जी ने कहा कि आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाला देश विश्व में केवल भारत है। आयोजन में आमंत्रित पद्मश्री प्राप्त विद्वान डा. बी.के.एस. संजय जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती समाज सुधारक थे। उन्होंने हम जैसे साधारण लोगों को भी समाज सुधारक बना दिया है। संजय जी ने परिवर्तन को संसार का नियम बताया। उन्होंने कहा कि मनुष्यों के विचारों में बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही आ सकता है। मनुष्य में अच्छी व बुरी आदतें बचपन में ही पड़ती हैं। उन्होनें बच्चों में अच्छी आदतें डालने की प्रेरणा की जिससे भारत का भविष्य अच्छा हो सके। बागेश्वर से पधारे श्री गोविन्द सिंह भण्डारी अधिवक्ता ने भी सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने आगामी 28–29 अक्टूबर 2023 को ज्वालापुर–हरिद्वार में एक आर्य महासम्मेलन आयोजित किए जाने की जानकारी दी जिसका आयोजन श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी आदि ऋषिभक्त मिलकर करेंगे। श्री गोविन्दसिंह जी ने अन्य कुछ जानकारियां भी सदस्यों को दीं। इसके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरांचल के प्रधान श्री विश्वमित्र आचार्य सभी विद्वानों, अतिथियों एवं श्रोताओं को आज के कार्यक्रम में पधारने और उसे सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। वैदिक संस्कृति संगोष्ठि का उद्देश्य वैदिक धर्मियों में निराशा दूर कर वर्तमान परिस्थितियों में उनका मार्गदर्शन करना था। लोगों ने बड़ी संख्या में इस आयोजन में भाग लिया। विद्वानों के उद्बोधन एवं श्रोताओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति से यह आयोजन श्रोताओं में उत्साह उत्पन्न करने में सफल रहा। यह भी निश्चय किया गया कि समय–समय पर ऐसे आयोजन आयोजित किये जाते रहेंगे और समाज का मार्गदर्शन किया जाता रहेगा। सभास्थल के बाहर आर्य साहित्य का सस्ते दामों पर वितरण एवं विक्रय भी किया जा रहा था। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी श्रोताबन्धुओं को अल्पाहार का एक पैकेट दिया गया। आचार्य डा. धनंजय आर्य जी का सफल संचालन कार्यक्रम की एक विशेषता रही। जिन विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया वह सब धन्यवाद के पात्र हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.:** 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970